श्रीगुरुमाई के वचनों पर ध्यान

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

कलियुग, साधना का समय

सत्संग के दौरान श्रीगुरुमाई ने युगों के विषय में जो कहा उससे मैं मन्त्रमुग्ध रह गई। भारत के शास्त्रों के अनुसार, वर्तमान समय में हम कलियुग में जी रहे हैं। गुरुमाई जी ने कहा कि आमतौर पर लोग भय और घबराहट के साथ कलियुग के बारे में बात करते हैं; वे इसे अराजकता और विध्वंस के समान मानते हैं।

असल बात यह है कि अच्छाई और विनाश दोनों, सभी युगों में हुए हैं। भारतीय शास्त्रों और कथाओं को सरसरी तौर पर पढ़ने से भी यह ज़ाहिर हो जाएगा। फिर भी किसी कारणवश, ऐसा माना जाता है कि कलियुग में दुष्टता का प्रभाव पिछले युगों की अपेक्षा अधिक है।

इसलिए जब गुरुमाई जी ने बताया कि भारतीय सन्तजन कलियुग को लेकर निर्भय थे तो यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी। वे भय से सहम नहीं गए। वरन्, उन्होंने इस युग को एक अवसर के रूप में देखा। उन्होंने सभी को साधना करने के लिए, भगवन्नाम गाने के लिए प्रेरित किया, यह समझने के लिए प्रेरित किया कि भगवान का नाम एक बार भी लेने से आत्मज्ञान प्राप्त हो सकता है। उन्होंने देखा कि सचमुच अगर कोई ख़तरा है तो वह है, भगवन्नाम को भूल जाना। जैसाकि सन्त-कवि नामदेव महाराज अपने एक अभंग में कहते हैं : "हे ईश्वर आपका नाम अमृत से भी मधुर है। परन्तु, हे केशव, मेरा मन इसे क्यों नहीं जपता?"

निस्सन्देह, अच्छे और बुरे, दोनों समय में साधना की जा सकती है और करनी भी चाहिए। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि सूरज की रोशनी हमें दिख रही है या हमारी नज़रों से ओझल हो गई है। परन्तु मैंने देखा है—और हो सकता है आपने भी देखा हो—कि जब परिस्थितियाँ कुछ प्रतिकूल होती हैं, तब हम साधना करने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं। जब समय अच्छा चल रहा होता है तो 'प्रयत्नों में शिथिल हो जाना', अभ्यासों को कल, परसों और उसके अगले दिन पर टाल देना आसान होता है और यह सब करते हुए हम खुद को एक झूठे [या कम-से-कम अस्थायी] सुरक्षा के भाव में लपेट लेते हैं जो उस पर टिका हुआ है जिसे हम अपने से बाहर देख, सुन व महसूस कर सकते हैं।

परन्तु जब ये बाहरी बुनियादें हिलती हुई महसूस होने लगती हैं, जब ढह जाने का ख़तरा अचानक इस तरह स्पष्टतः महसूस होने लगता है जैसे शायद एक साल या दस साल पहले नहीं महसूस हुआ होता, तब यह स्वाभाविक ही है कि हम उसे खोजते हैं जो हमेशा स्थिर रहे। भले ही हमारे चारों ओर का संसार-सागर कितना भी उग्र क्यों न हो, उसमें कितनी भी उथल-पुथल क्यों न हो रही हो, हमें हमेशा ही शरण मिल सके ऐसा स्थान कहाँ है? वह स्थान हमारे अन्दर ही है, वह धाम जहाँ पहुँचने के लिए श्रीगुरु हमारा मार्गदर्शन करती हैं—और जहाँ हम केवल परिश्रमपूर्वक की गई अपनी साधना द्वारा ही पहुँच सकते हैं।

अब मैं आपसे पूछती हूँ : क्या यह सच नहीं है?

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।